

# देह की गंध का महत्व

नरेन्द्र देवांगन

**ऑ**स्ट्रेलिया के सरकारी कर्मचारियों के लिए आने वाले दिनों में ऐसी व्यवस्था की जा रही है, जिससे उनके कम्प्यूटर उनकी पहचान पसीने की गंध से करेंगे। ऐसा सरकारी कम्प्यूटरों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए किया जा रहा है। ऑस्ट्रेलियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिमिनोलॉजी की रिपोर्ट के मुताबिक ऑस्ट्रेलिया के सभी सरकारी विभागों में ऐसे कम्प्यूटर लगाने की योजना बनाई गई है। ऑस्ट्रेलिया में हुए ताज़ा शोध के मुताबिक वहां के ज़्यादातर सरकारी कम्प्यूटरों का गलत इस्तेमाल होता है। इसे रोकने के लिए यह तकनीक अपनाई जा रही है। ऑस्ट्रेलियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिमिनोलॉजी के मुताबिक अपराधियों को पकड़ने के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जाएगा। पसीने की गंध के आधार पर लोगों की अलग-अलग श्रेणियां बनाई जाएंगी।

उधर जापान में एक कमीज़ बन गई है जो पसीने की गंध से लड़ने का औज़ार कही जा रही है। वहां की सौंदर्य प्रसाधन बनाने वाली एक कंपनी ने ऐसी कमीज़ बनाई है जिसमें डिओडोरेंट लगा हुआ है। इनबिल्ट डिओडोरेंट वाली यह कमीज़ आजकल जापान में काफी लोकप्रिय हो रही है। जापान के गिंजा यामागाटा की दुकानों की श्रृंखला में यह कमीज़ उपलब्ध है और इसकी भारी मांग है। जापान के लोग तीखी गंध वाले डिओडोरेंट और परफ्यूम इस्तेमाल नहीं करते हैं, इसलिए उनके लिए यह उपयोगी कमीज़ है। यह देखने में सामान्य कमीज़ की तरह ही है, लेकिन इसके धागों में ऐसे डिओडोरेंट का छिड़काव किया गया है, जिससे यह कमीज़ लंबे समय तक पसीने की गंध को रोकती है। सौंदर्य प्रसाधन की बड़ी कंपनी सिसेडो के लिए काम कर रहे डॉक्टर सोजी नाकामुरा ने यह कमीज़ बनाई है। इस कमीज़ के अलावा पुरुषों और महिलाओं के अंतर्वस्त्र भी ऐसे बने हैं जो पसीने की गंध को रोकते हैं।

शरीर की गंध प्राणियों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। खास तौर से यह वन्य प्राणियों के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इनमें गंध बोली या भाषा की



तरह काम करती हैं। इन गंधों के सहारे ही अनेक प्राणी अपने जीवन साथी की तलाश करते हैं और शिकार का पता लगाते हैं, अपने उपयोग लायक पौधों को खोजते हैं और तरह-तरह के काम निपटाते हैं। इन खास गंधों को ही वैज्ञानिक फेरोमोन के नाम से पुकारते हैं। इन गंधों के संवेदना के लिए प्रकृति ने छोटे-बड़े अनेक प्राणियों को रसायन संवेदी कोशिकाएं प्रदान की हैं। ये गंध उत्पन्न करने वाले रसायन के संपर्क में आकर प्राणी को गंध की पहचान कराती हैं।

कीड़ों-मकोड़ों में गंध का एहसास काफी तेज़ देखा गया है। इनकी गंध संवेदी कोशिकाएं रोमों, त्वचा की बाह्य पर्त (क्यूटिकल) के छिद्रों या एंटीना में हो सकती हैं। मछलियों के नथुनों में लगी कोशिकाएं नाक का काम करती हैं। हमारी नाक में भी सूंघने का काम एक खास झिल्ली करती है, जिसमें गंध-संवेदी कोशिकाएं होती हैं। इस झिल्ली के छोटे होने के कारण ही हमारी नाक गंध का एहसास कराने में ज़्यादा कुशल नहीं है। मनुष्यों की नाक में यह झिल्ली केवल चार वर्ग सेंटीमीटर जगह घेरती है जबकि सूंघने के लिए मशहूर कुत्तों में इसका आकार डेढ़ सौ वर्ग सेंटीमीटर तक होता है। ध्रुवीय प्रदेशों में रहने वाला भालू भी सूंघने के मामले में बहुत तेज़ है। यह बीस किलोमीटर दूर से ही मरे हुए जानवर की गंध भांप लेता है। तुर्की गरुड़ भी कई किलोमीटर दूर से मरे हुए जानवर की गंध सूंघ लेता है। ऑस्ट्रेलिया की मशहूर कीवी चिड़िया ज़मीन में दबे भोजन को सूंघकर ढूंढ निकालती है। कबूतर न केवल सूंघने की क्षमता से लैस है, बल्कि वह बहुत तरह की गंधों को अलग-अलग भी पहचान सकता है। अपने इलाके की गंध को

पहचान कर ही कबूतर अपने अङ्गुली पर उतरते हैं। हिरण, रेनडीयर वगैरह गंध का इस्तेमाल अपने साथियों को सचेत करने के लिए करते हैं। खतरे का आभास होते ही ये एक खास गंध छोड़ते हुए भाग खड़े होते हैं। यह गंध वातावरण में फैलकर इनके साथियों को भी चौकन्ना कर देती है।

प्राणी इसी गंध के सहारे अपनी सीमा तय कर लेते हैं। इस गंध-सीमा का अतिक्रमण होने पर ही प्राणियों में आपस में युद्ध होता है।

मनुष्य में भी शरीर की गंध एक महत्वपूर्ण तत्व है। दुनिया भर में इस तरह के अनेक शोध हुए हैं, जिनसे पता चलता है कि मनुष्य के शरीर की गंध विपरीत लिंग को आकर्षित करने में सहायक होती है, लेकिन कई मामलों में यह विकर्षण की वजह बन जाती है। शरीर की गंध आम तौर पर एक समस्या मानी जाती है, खासकर तब जब यह बहुत बढ़ जाए। बसों और रेलगाड़ियों से लेकर दफ्तरों तक जिस व्यक्ति की शरीर की गंध बहुत प्रभावी और आक्रामक होती है, उसे अक्सर शर्मिंदगी का शिकार होना पड़ता है। यह अलग बात है कि पसीने की वजह से शरीर से निकलने वाली गंध के अलावा हर व्यक्ति की एक अलग शारीरिक गंध होती है। पसीना इस गंध को बढ़ाकर शर्मिंदगी की वजह बना देता है।

शरीर की गंध आम तौर पर बैक्टीरिया की वजह से होती है। जब पसीना जम जाता है या उसका निकलना रुक जाता है तो गंध पैदा होती है। शरीर के वे हिस्से जहां से पसीने को भाप बनकर उड़ने का रास्ता नहीं मिलता है या कम होता है, वहां सबसे ज्यादा गंध होती है। इसके अलावा एक वजह मनोवैज्ञानिक भी बताई जाती है। कई लोगों को खामखाह लगता है कि उनके शरीर से गंध निकल रही है और इससे सचमुच उनके शरीर से पसीना निकलने लगता है। अन्य संभावित कारणों में चर्म रोग हो जाना या चमड़े का संक्रमित हो जाना शामिल हैं, जैसा कि आम तौर पर धावकों के पैर में हो जाता है। दूसरा संभावित कारण यह है कि बैक्टीरिया जनित संक्रमण हो जाए। मेटाबॉलिक गड़बड़ियों से भी तीखी गंध शरीर से निकलने लगती है। नहाना, साफ कपड़े पहनना, डिऑडोरेंट इस्तेमाल करना इस समस्या से

छुटकारा पाने के आसान उपाय हैं। कई लोगों को इन उपायों से छुटकारा नहीं मिलता है, तब उन्हें डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए।

पसीने की गंध से छुटकारा पाने के लिए आम तौर पर डिऑडोरेंट का इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन यह सिर्फ फौरी तौर पर गंध से छुटकारा दिला सकता है। जब तक इसका स्थायी समाधान नहीं होता, तब तक व्यक्ति शारीरिक और भावनात्मक रूप से परेशान रहता है। वस्तुतः पसीना होमियोस्टैसिस यानी शरीर के ताप को स्थिर रखने और ठंडक देने का सबसे उत्तम उपाय है। शरीर का तापमान आम तौर पर 36 से 37 डिग्री सेल्सियस होता है, लेकिन जब इसका तापमान बढ़ जाता है तो संतुलन को बनाए रखने के लिए शरीर की पच्चीस लाख पसीना ग्रंथियां वातानुकूलन का काम शुरू कर देती हैं।

यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि पसीने की अपनी कोई गंध नहीं होती है। इसकी समस्या तब शुरू होती है जब एपोक्राइन ग्रंथि में सेक्स हार्मोन सक्रिय होते हैं। इन ग्रंथियों में से सफेद रंग का गंधरहित तरल निकलता है, जो त्वचा के बाहरी हिस्से पर मौजूद बैक्टीरिया के संपर्क में आता है। इसके अलावा त्वचा की देखरेख नहीं करने और गंदा रहने के कारण भी पसीने की गंध बढ़ जाती है और भावात्मक रूप से तनाव में रहना भी इसकी एक वजह हो सकती है। महिलाओं में रजोनिवृत्ति और पुरुषों में कारोबारी या घरेलू तनाव इसकी वजह हो सकते हैं। पसीना निकलना या इसमें एक सीमा तक गंध होना एक सामान्य शारीरिक प्रक्रिया है, लेकिन इसके ज्यादा हो जाने का मतलब है कि शरीर के भीतरी हिस्से में कोई गड़बड़ी है और ऐसी हालत में डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए।

लंदन में हुए हालिया शोध से पता चला है कि पसीना और इसकी गंध कई लोगों के लिए गंभीर समस्या खड़ी कर देते हैं। इसके उपचार में जिन चीजों का इस्तेमाल होता है, उनसे भी समस्या के बढ़ जाने का खतरा होता है। पसीने की गंध भगाने के लिए इस्तेमाल होने वाली चीजों में एल्यूमिनियम की मात्रा काफी होती है, यह अल्जाइमर की वजह बन सकता है। ताज़ा अनुसंधानों के मुताबिक महिलाओं

में मासिक रक्तस्राव के दिनों में ज़्यादा पसीना निकलता है और इससे पैदा होने वाला तनाव गंध को भी बढ़ा देता है। इसे रोकने के लिए साफ-सफाई के साथ-साथ पोषण पर ध्यान देने का सुझाव दिया जाता है।

पोषण की कमी से भी पसीने की गंध बढ़ती है, इसलिए विकसित देशों में पसीने की गंध रोकने के लिए लोग पोषण सम्बंधी सलाह भी लेने लगे हैं। कई बार पसीने में गंध शरीर के भीतरी हिस्से में कुछ गड़बड़ियों की वजह से होती है। लीवर की खामी, डायबिटीज़, पाचन की समस्या, लीवर

संक्रमण आदि भी पसीने की गंध के कारण होते हैं। लंदन के इंपीरियल कॉलेज में हुए मेडिकल परीक्षण से पता चला है कि कई लोगों में पसीने की गंध शरीर के पाचन तंत्र में कुदरती तौर पर बसे दोस्ताना व्यवहार वाले बैक्टीरिया की वजह से होती है। इस अनुसंधान के मुताबिक सात फीसदी लोग पसीने की गंध की शिकायत करते हैं। इनमें देखा गया है कि एंजाइम की गड़बड़ी से पाचन तंत्र में खामी होती है। इसलिए पोषण में सुधार से भी पसीने की गंध को रोका जा सकता है। (स्रोत फीचर्स)